


---

# Svaminarayanaprakatahetuh

——  
स्वामिनारायणप्रकटहेतुः

——  
Document Information



---

Text title : Svaminarayanaprakatahetuh

File name : svAminArAyaNaprakaTahetuH.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna, gurudev, deities\_misc, ShaTkam

Location : doc\_vishhnu

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

# Svaminarayanaprakatahetuh

---

## स्वामिनारायणप्रकटछेत्तुः

---



(भुज्जगप्रयातम्)

प्रभौ प्रेमवन्तः परैकान्तिका ये जना वैष्णवाः सन्ति तेषां सुभाय ।

तद्विच्छापप्रपूर्णाय तल्लालनायाक्षरादागतस्तत्र छेत्तुः परोऽयम् ॥ १ ॥

अधर्मासुरक्लेशगौ भक्तिधर्मो तयो रक्षाणाय प्रवृत्तौ पृथिव्याम् ।

स्वयं कोसलच्छुष्ययोधामधर्मावये जन्म जग्राह छेत्तुर्द्वितीयः ॥ २ ॥

सदा स्वाक्षरस्थावतारी प्रभुर्यः स सर्वोपरि ज्ञानमस्ति स्वकीयम् ।

निजोपासनायाः पृथिव्यां प्रवृत्तौ तयोरागतो छेत्तुरुक्तस्तृतीयः ॥ ३ ॥

स्वकीयावतारास्तदीयाश्च भक्ता निजोपासनां ज्ञानमाबोधय तेषाम् ।

तथैतान् स्वधामाधिनेतुं विचिन्त्यागतः श्रीहरिर्छेत्तुरुक्तश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

शिरान्नष्ट ऐकान्तिको धर्म उर्व्या स तत्स्थापनायासतां निग्राहय ।

सदैकान्तिकानां सतां रक्षाणयागतः श्रीहरिः पञ्चमो छेत्तुरुक्तः ॥ ५ ॥

स्वयं पूर्वज्जवान्मुक्षुन्ननिजोपासनाज्ञानमाबोधय नेतुं स्वधाम ।

तथा स्वस्वभक्ताश्रयेणापि कर्तुं मुमुक्षुन्नवानागतः षष्ठछेत्तुः ॥ ६ ॥

छति श्रीस्वामिनारायणभगवानस्य प्रकटछेत्तुः समाप्ता ।

---

*Svaminarayanaprakatahetuh*

pdf was typeset on August 9, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

